ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 30

2017

JOURNAL

OF THE

MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava Prof. Vandana Gupta

15. सरदार भगत सिंह की गहन अध्ययन अभिरूचि का ऐतिहासिक अध्ययन 71
प्रोफेसर वन्दना गुप्ता
16. आरंभिक भारत-अरब सम्बन्ध : एक विश्लेषण 75
डॉ. अनिल दुबे
17. लोक धर्म में नागपूजा 80
डॉ. जरीना जॉन चौधरी
18. राय बहादुर डॉ. हीरालाल-व्यक्तित्व एवं कृतित्व (150 वीं जयंती वर्ष पर विशेष) 86
डॉ. आर. एन. श्रीवास्तव
19. सदारंग अदारंग की बंदिशों में प्रयुक्त ब्रजभाषा तथा भोजपुरी 90
डॉ. गीता राजपूत
20. जैन धर्म में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा 93
डॉ. आर. पी. सिंह
21. हरीसिंह गौर पुरातात्त्विक संग्रहालय, सागर की उमा - महेश्वर
प्रतिमाएँ : प्रतिमाशास्त्रीय अवलोकन 98
डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव
22. नवलगढ़ की हवेलियाँ 105
डॉ. निकिता सिंह ढाका
23. सांस्कृतिक समन्वय के प्रतिबिंब : मध्यकालीन सूफी 111
डॉ. अलीमा शहनाज सिद्दीकी
24. ऋग्वेद में वर्णित खाद्य एवं पेय 115
हिमांशु सिंह
25. महाकौशल क्षेत्र की प्राचीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (एक अनुशीलन) 118
डॉ. महेश कुमार शुक्ल
26. छत्तीसगढ़ के "छत्तीस गढ़" (राज्य के नामकरण के विशेष सन्दर्भ में) 122
विपिन तिर्की
27. गोपाद्रि क्षेत्र के कृष्ण-जन्म संबंधी फलकों का अध्ययन 127
डॉ. शान्तिदेव सिसौदिया
28. स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारों का योगदान 132
डॉ. ज्योति आचार्य
29. राहतगढ़ (सागर) का रंगमहल 138
डॉ. संतोष तिवारी

हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय, सागर की उमा - महेश्वर प्रतिमाएँ : प्रतिमाशास्त्रीय अवलोकन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक - प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

कला धार्मिक भावनाओं एवं आस्थाओं की मूर्त अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। मानव ने अपनी भावनाओं एवं विचारों का प्रत्यक्षीकरण सर्वप्रथम कला के माध्यम से ही किया। कला का एक रूप मूर्तिकला है, जिसमें मानवीय भावनाओं एवं धार्मिक आस्थाओं के अमूर्त रूप को मूर्त रुप देकर उसे स्थायित्व प्रदान करना रहा है। इसमें उसके मनोभाव, विचार, धर्म एवं संस्कृति का समागम रहता है। भारतीय संस्कृति में मूर्तिकला को सामान्यतया धर्म की संवाहिका के रूप में प्रतिबिम्बित किया गया है। कला एवं साहित्य में शैव धर्म का माहात्म्य प्रारम्भ से ही दिखायी देता है। शिव से संबंधित प्रतिमाओं को उनके कलागत, रुपगत एवं भावगत दृष्टि से दो रूपों में विभक्त किया गया है, जो रौद्र एवं सौम्य रूप से संबंधित है। सौम्य रूप में शिव के शान्त, अनुग्रह तथा कल्याणकारक भाव प्रदर्शित हैं। इस अवस्था में शान्तभाव, इच्छित वस्तु का प्रदान, पार्वती के साथ संभाषण, योग तथा ज्ञान की शिक्षा आदि सद्भावना के साथ अंकन किया गया है। सौम्य प्रतिमाएँ स्थानक तथा आसनस्थ दोनों प्रकार की मिलती हैं। सौम्य प्रतिमाओं में सोम-स्कन्द, आलिंगन चन्द्रशेखर, सदाशिव, नीलकंठ, महेश्वर, गंगाधर एवं उमा-महेश्वर प्रतिमाएँ महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र मध्य प्रदेश के सागर जिले में अवस्थित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय की उमा-महेश्वर प्रतिमाओं के अध्ययन पर आधारित है। सागर क्षेत्र का संपूर्ण इतिहास समृद्ध एवं वैभवशाली सांस्कृतिक चेतना का हृदयस्थली रहा है। इस अंचल को गुप्त, कलचुरि, राष्ट्रकूट, प्रतिहार, चन्देल एवं परमार राजवंशो ने अपने शौर्य, पराक्रम, रचनात्मक क्रियाकलापों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से स्पंदित करते हुये संरक्षण प्रदान किया। प्रस्तुत शोध पत्र में उमा-महेश्वर प्रतिमाओं का शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के आधार पर अध्ययन किया गया है। इसमें उमा-महेश्वर प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण, उनकी भाव-भंगिमा, शारीरिक व आलंकारिक सौन्दर्य तथा काल गणना पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही इन प्रतिमाओं का आध्यात्मिक व सांसारिक स्वरुप तथा निर्माण के उद्देश्य आदि पर भी विचार -विमर्श किया गया है।

प्रतिमाशास्त्रीय ग्रन्थों विश्णुधर्मोत्तर पुराण, अपराजितपृच्छा, अंशुमद्भेदागम, रुपमण्डन, देवता मूर्ति प्रकरण एवं मत्स्यपुराण आदि में उमा-महेश्वर प्रतिमाओं के लक्षणों का विवरण प्राप्त होता है। इन ग्रन्थों में उमा-महेश्वर प्रतिमाओं को विविध नामों यथा आलिंगन चन्द्रशेखर, हर-गौरी, त्रिपुरसुन्दरी एवं शिव-पार्वती आदि नामों से उल्लखित किया गया है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में उमा-महेश्वर के प्रतिमाशास्त्रीय लक्षणों का

उल्लेख किया गया है। जिसके अनुसार उमा एवं शिव को एक ही पीठिका पर आलिंगन करते हुये प्रदर्शित करना चाहिये। जट-जूटधारी शिव के दाहिनें हाथ में नीलोत्पल तथा बायाँ हाथ उमा के कन्धे पर दिखाना चाहिये। उमा का दाहिना हाथ शिव के कन्धे पर और हाथ में कमल पुष्प प्रदर्शित किया जाना चाहिये।[1] कभी-कभी महेश्वर के दाहिनें हाथ में त्रिशूल के अंकन का भी विधान है। पीठिका के निचले हिस्से पर सिंह एवं नन्दी का अंकन क्रमशः उमा एवं महेश्वर के वाहन के रूप में दर्शित है। रुपमण्डन के अनुसार उमा महेश्वर प्रतिमा के अन्तर्गत शिव को चतुर्भुजी दिखाना चाहिये। महेश्वर के दाहिनें हाथ में त्रिशूल तथा मातुलिंग रहता है। बायें हाथ में एक हाथ देवी उमा को आलिंगन में लिये हुए तथा दूसरे में सर्प रहता है। देवी उमा का हाथ महेश्वर के स्कन्ध पर रहता है। इसी ग्रन्थ में उमा-महेश्वर प्रतिमा के साथ वृषभ, स्कन्द, नन्दी तथा नृत्य करते हुये भृँगी ऋषि को भी प्रदर्शित करने का उल्लेख है। अपराजितपृच्छा में वर्णित उमा-महेश्वर का अंकन रुपमण्डन सदृश्य ही है। इसमें उमा-महेश्वर को समीपस्थ बैठे हुये दिखलाया गया है। महेश्वर के दाहिनें हाथ में बीजपूरक एवं त्रिशूल है। बायाँ हाथ उमा की पीठ के पीछे से निकला हुआ है, और उनमें नाग धारण किये हुये हैं। उमा का दाहिना हाथ देव के स्कन्ध को स्पर्श कर रहा है[2], उसमें दर्पण धारण की हुयी हैं। देवमूर्ति के नीचे नन्दी का अंकन होना चाहिये। प्रतिमा के एक ओर कार्तिकेय तथा गणेश का अंकन तथा दूसरी ओर क्षीणकाय भृँगी नृत्य करता दर्शाने का निर्देष है।[3] मत्स्यपुराण में उमा-महेश्वर को परम्परागत आभूषणों से सज्जित बतलाया गया है। इसमें शिव को द्विभुजी अथवा चतुर्भुजी बतलाया गया है, जिनके दाहिनें हाथ में त्रिशूल एवं कमल तथा बायें हाथ से देवी को आलिंगन एवं दर्पण के साथ प्रदर्शित करने का विधान है।[4] देवतामूर्तिप्रकरण में भी उमा-महेश्वर के लगभग इसी प्रकार के प्रतिमाशास्त्रीय लक्षणों का अंकन मिलता है।[5] श्रीमद्भागवतपुराण में उल्लेखित है कि शिव पार्वती के साथ कैलाश पर्वत पर विराजमान रहते हैं। सिद्ध, चारण, ऋषि -मुनियों ने जब शिव को देखा उस समय देवी पार्वती भी उनके समीप थी। शिव जी उन्हें अपने अंक (गोद) में बैठाए हुए थे और अपना एक हाथ उनकी पीठ पर रखे हुए थे।[6] अंशुमद्भेदागम में चन्द्रशेखर अपने बगल में बैठी उमा का आलिंगन करते हुए दिखाये जाते हैं। उमा दाहिनें हाथ में कमल तथा बायें हाथ से महेश्वर के कटि का आलिंगन करती हैं।[7] इसके अतिरिक्त उमा-महेश्वर प्रतिमाओं के निर्माण विधि एवं माहात्म्य चर्चा का उल्लेख लिंगपुराण[8], वामनपुराण[9] एवं शिवपुराण[10] में भी मिलता है।

उमा-महेश्वर प्रतिमा में उमा को सदैव बायीं ओर स्थान दिया गया है। सामान्यतया शिव ललितासन मुद्रा में तथा उमा उनकी वाम जंघा पर पालथी मारे बैठी दिखलायी देती हैं। शिव सदैव जटामुकुट या जटाभार, एकावली एवं अधोवस्त्र से तथा उमा स्त्रियोचित आभूषणों से सुशोभित हैं। उमा शिव की ओर देखते हुए प्रदर्शित होती हैं। उमा-महेश्वर की प्रतिमा कुषाण काल से मिलनी प्रारम्भ हो जाती है।[11] गुप्तकाल में इन प्रतिमाओं में अलंकरण की विविधता बढ़ गयी। हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय, सागर में उमा-महेश्वर की विविध प्रकार की प्रतिमाएँ संग्रहित हैं। ये प्रतिमाएँ सागर क्षेत्र के विविध स्थलों से प्राप्त की गयी हैं।

प्राप्ति स्थल : सागर, म. प्र.

प्रतिमा : उमा-महेश्वर प्रतिमा

प्रकृति : बलुआ प्रस्तर

काल : 10-11वीं शताब्दी ईस्वी

आकार : 68 X 43 सेमी0

पंजीयन संख्या : R 429

प्रस्तुत प्रतिमा त्रिरथ पादपीठ के ऊपर बनायी गयी है। एक अधिष्ठान पर आसीन ललितानमुद्रा में उमा-महेश्वर को दर्शाया गया है। इस प्रतिमा में महेश्वर को चतुर्भुजी एवं उमा को द्विभुजी अंकित किया गया है। महेश्वर का अग्र दाहिना हाथ वरदमुद्रा में तथा अन्य ऊपरी दाहिनें हाथ में त्रिशूल धारण किये हुये हैं। उनका एक बाँया हाथ उमा के वाम वक्ष को स्पर्श कर रहा है तथा अन्य बायें हाथ में सर्पफण धारण किये हुये हैं। उमा अपने दाहिनें हाथ से महेश्वर का आलिंगन कर रही हैं। उनका बाँया हाथ तर्जनीमुद्रा में दर्शित है। उमा की मुखाकृति खण्डित हो गयी है। उमा-महेश्वर के पैरों के नीचे उनके वाहन व्याघ्र एवं नन्दी तथा दोनों के बीच भृंगी दृश्यमान हैं। इसमें उमा का बाँया पैर व्याघ्र के मस्तक पर है। महेश्वर के पीछे नुकीले किरणों युक्त गोलाकार प्रभामण्डल से सज्जित किया गया है। उमा-महेश्वर को परंपरागत आभूषणों से अलंकृत किया गया है। प्रतिमा वितान पर दोनों ओर उड़ते हुये गंधर्वों का अंकन किया गया है। परिकर में मांगलिक व्यालों एवं शिवगणों का अंकन किया गया है। दाहिनें परिकर के आन्तरिक शाखा में सबसे नीचे आसीनमुद्रा में गणेश का अंकन किया गया है। ठीक बायें परिकर के आन्तरिक शाखा में सबसे नीचे आसीनमुद्रा में कार्तिकेय का अंकन किया गया है। उमा-महेश्वर के पैरों के ठीक नीचे मध्यरथिका में अपने भुजबल से पादपीठ को उठाते हुये रावण का अंकन किया गया है। ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी से संबंधित इस प्रतिमा में महेश्वर को उनके परिवार के साथ दर्शित किया गया है (छायाचित्र संख्या -1)।

प्राप्ति स्थल : सागर, म.प्र.

प्रतिमाः उमा-महेश्वर प्रतिमा

प्रकृतिः बलुआ प्रस्तर

कालः 10-11वीं शताब्दी ईस्वी

आकारः 50 X 50 सेमी.

पंजीयन संख्याः R 551

प्रस्तुत उमा महेश्वर की प्रतिमा एक चौकी पर बनायी गयी है। इस प्रतिमा में महेश्वर का सिर एवं ऊपरी दाहिना पार्श्व खण्डित हो गया है। चतुर्भुजी शिव ललितासनमुद्रा में हैं, जिनकी बायीं जंघा पर उमा विराजमान हैं। शिव के एक दाहिनें हाथ में फल एवं दूसरा खण्डित है, जबकी एक बाँया हाथ उमा को आलिंगनबद्ध किये हैं तथा दूसरा खण्डित है। उमा द्विभुजी हैं, जिनका दाहिना हाथ शिव के स्कन्ध पर तथा बायें हाथ में दर्पण ली हुयी है। उमा-महेश्वर परम्परागत आभूषण धारण किये हुये हैं। प्रतिमा आसन के नीचे मध्य में महेश्वर का वाहन नन्दी को सम्मुख अंकित किया गया है। उसके बायीं ओर भारवाहक उपासिका एवं अन्त में उमा का वाहन व्याघ्र को दर्शाया गया है। सबसे निचले प्रकोष्ठ में अपने दोनों भुजाओं से पादपीठ को उठाते हुये रावण का अंकन किया गया है। इसके दोनों तरफ अनुचरों को नतमस्तक होते हुये दिखलाया गया है। उमा महेश्वर प्रतिमा के परिकर में शिव गणों, उनके पुत्रों एवं व्याल का अंकन है। दाहिनें परिकर में दण्डधारण किये हुये शिवगण एवं उसके नीचे गणेश का अंकन है। परिकर में बायीं तरफ सबसे ऊपर व्याल, उसके नीचे दण्डधारण किये हुये शिवगण एवं अन्त में कार्तिकेय का अंकन किया गया है(छायाचित्र संख्या -2)।

प्राप्ति स्थल : सागर, म.प्र.
प्रतिमा : उमा-महेश्वर प्रतिमा
प्रकृति : बलुआ प्रस्तर
काल : 10वीं शताब्दी ईस्वी
आकार : 34 X 28 सेमी0
पंजीयन संख्या : R 385

प्रस्तुत उमा-महेश्वर की प्रतिमा प्रस्तर फलक पर उकेर कर बनायी गयी है। इसमें वे दोनों एक पादपीठ पर आसीन हैं। चतुर्भुजी महेश्वर ललितासनमुद्रा में आसीन है। उमा एवं महेश्वर एक दूसरे की ओर देखते हुये दर्शाये गये हैं। कालिदास ने कुमारसंभव में उमा-महेश्वर के इस रूप का वर्णन किया है। उनके अनुसार पार्वती के मुँह की तरफ शिव इस प्रकार देखते हैं कि मानों वे मुख से नहीं नेत्रों से उमा का पान कर रहे हैं।[11] महेश्वर जटामुकुट, कानों में चक्रकुण्डल, मणिमुक्ताहार, यज्ञोपवीत, केयूर, कंकण, कटिवलय, उरुदाम एवं पादवलय आदि आभूषण धारण किये हुये हैं। महेश्वर के दाहिनें दो हाथों में क्रमशः पुष्पगुच्छ एवं मातुलिंग अस्पष्ट हैं। बाँये एक हाथ में त्रिशूल तथा दूसरा जंघा पर रखा हुआ है। द्विभुजी उमा का दाहिना हाथ महेश्वर के स्कन्ध पर तथा बाँये हाथ में नीलोत्पल धारण की हुयी हैं। उमा की केशराशि को भी विविध आभूषणों से सज्जित किया गया है। उनके कानों में कुण्डल, गले में द्विवली हार, केयूर, कटिसूत्र एवं पायबेज का अंकन है। महेश्वर का बाँया पैर नन्दी के मस्तक पर है। सबसे ऊपरी हिस्से में पुष्पगुच्छिका का अंकन किया गया है। उमा-महेश्वर के दोनों पार्श्वों मे उड़ते हुये मालाधारी गन्धर्वों का अंकन किया गया है। उसके नीचे शिव के गणों का अंकन है, जो दण्ड धारण किये हुये हैं(छायाचित्र संख्या -3)।

प्राप्ति स्थल : सागर, म.प्र.
प्रतिमा : उमा-महेश्वर प्रतिमा
प्रकृति : बलुआ प्रस्तर
काल : 10वीं शताब्दी ईस्वी
आकार : 43 X 48 सेमी.
पंजीयन संख्या: R 329

यह प्रतिमा एक प्रस्तर खण्ड पर ऊकेर कर बनायी गयी है। इसमें उमा एवं महेश्वर के चेहरे एवं अंशतः हाथ खण्डित हैं। महेश्वर ललितासनमुद्रा में आसीन हैं, जिनके बाँयें जंघे पर उमा बैठी हुयी हैं। वह अपना पैर घुटने से मोड़ी हुयी हैं। उन दोनों के पैरों के नीचे उनके वाहन नन्दी एवं व्याघ्र का अंकन किया गया है, जिनके मुख खण्डित हो गये हैं। बाँये पाशर्व के सबसे निचले हिस्से में गणेश का अंकन किया गया है। ऊपर एवं नीचे दोनों पशर्वों में क्रमशः आसीन एवं स्थानक मुद्रा में देवगणों का अंकन किया गया है। महेश्वर के प्रभामण्डल को सादे ढंग से ऊकेरा गया है। उमा का दाहिना हाथ महेश्वर के स्कन्ध पर रखा हुआ है(छायाचित्र संख्या -4)।

निष्कर्ष : उपरोक्त विवरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पूर्व मध्यकालीन मध्य भारत में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं का विशेष प्रचलन था। यद्यपि इस प्रकार की प्रतिमाएँ पहली शताब्दी ईस्वी सन् से

ही मिलनी प्रारम्भ हो जाती है। गुप्तकाल में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं का विशेष महत्व रहा। पूर्व मध्यकाल में यह क्षेत्र शैव-शाक्त धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा। इसके फलस्वरूप इस काल में उमा-महेश्वर की प्रतिमाओं का निर्माण सबसे ज्यादा हुआ। हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय की सभी उमा-महेश्वर प्रतिमाएँ आसनस्थमुद्रा में ही प्रदर्शित हैं। इन प्रतिमाओं का निर्माण प्रतिमा शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुरुप हुआ है। इस संग्रहालय की सबसे प्रमुख त्रिफलक प्रकार की उमा-महेश्वर प्रतिमा है। इसमें शासक का अपने प्रतिद्वंदी शासक से युद्ध, तत्पश्चात विजय अभियान तथा अन्त में अपने आराध्य देव शिव के चरणों में समर्पण का दृश्य अंकित है। उमा-महेश्वर प्रतिमा में प्रेम (श्रृंगार) रस का निष्यन्दन किया गया है। इन प्रतिमाओं में अधिकांशतः उमा-महेश्वर युगल को अतीव सम्मोहक मुद्रा में एक दूसरे की ओर देखते हुये प्रदर्शित किया गया है। महेश्वर के मुख पर अनुराग और उमा की मुंदी हुई आंखों पर नारी सुलभ लज्जा का भाव दृष्टिगोचर होता है। ये प्रतिमाएँ अपनी भावाभिव्यंजना के माध्यम से मुख, हस्त एवं पाद मुद्रा और शरीर सौष्ठव के विभिन्न अवयवों की भंगिमाओं से आध्यात्मिकता के साथ-साथ लौकिकता के अर्थपूर्ण भावों को प्रकट करती हैं। कहीं-कहीं उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में देवत्व की विराटता एवं भव्यता को दिखलाने का प्रयास किया गया है। संभवतः इसके लिये रावणानुग्रह दृष्य का अंकन किया गया है। दो प्रतिमाओं में रावण को अपनी दोनों भुजाओं द्वारा कैलाश पर्वत (पादपीठ पर आसीन उमामहेश्वर) को उठाते हुये अंकित किया गया है।

उमा-महेश्वर प्रतिमाएँ सफल दाम्पत्य जीवन की सौम्यता को भी निरुपित करती हैं। इनमें महेश्वर के अद्भुत परिवार का निदर्शन होता है, जिनमें कल्याण शक्ति उमा, देव सेनापति कार्तिकेय एवं प्रथम पूज्यदेव व विघ्नविनाशक गणपति हैं। ऐसा अद्भुत परिवार भारतीय संस्कृति का एक विशिष्ट पक्ष प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। इसके अतिरिक्त गृहस्थ जीवन के सौन्दर्य को दिखाने के लिये उन्हें आलिंगन मुद्रा एवं गले में परस्पर हाथ डाले प्रदर्शित किया गया है। साथ ही सर्प के स्थान पर कहीं-कहीं पुष्पगुच्छ, दर्पण एवं अंजनपात्र लिये हुये अंकित किया गया है। महेश्वर के गले में सर्प को भी बाहर की ओर मुख किये हुये दिखलाया गया है, जो यह इंगित करता है कि गृहस्थ जीवन में विषधर जीव का कोई औचित्य नहीं है। इन प्रतिमाओं में मांगलिक चिन्ह, सिंह शार्दूल एवं मालाधारी गंधर्व आदि का अंकन इसे और अधिक सौन्दर्य प्रदान करता है। ये सभी उमा-महेश्वर प्रतिमाएँ पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं। इस प्रकार ये कहा जा सकता है कि हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय, सागर में प्रदर्शित ये प्रतिमाएँ शिल्पग्रन्थों में वर्णित उमा-महेश्वर प्रतिमा लक्षणों का पूर्ण रूप से अनुपालन करते हुये निर्मित हैं। इन प्रतिमाओं में शैलीगत विशषताओं का भी समावेश दिखलायी देता है। ये प्रतिमाएँ उमा-महेश्वर के श्रृंगारिक प्रेम का विलक्षण प्रतीक हैं। वास्तव में उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में धर्म, कला, दर्शन एवं अध्यात्म के साथ- साथ सांसारिक सौन्दर्य बोध की भी अनुभूति होती हैं।

छायाचित्र-1 उमा-महेश्वर प्रतिमा,
पंजीयन संख्या : R 429

छायाचित्र- 2 उमा-महेश्वर प्रतिमा,
पंजीयन संख्या : R 551

छायाचित्र-3 उमा-महेश्वर प्रतिमा,
पंजीयन संख्या : R 385

छायाचित्र-4 उमा-महेश्वर प्रतिमा,
पंजीकरण संख्या - : R 329

सन्दर्भ

1. विष्णुधर्मोत्तरपुराण, प्रियबाला शाह (संपादक), बडौदा, 1958, 105, 8-10
   युग्मं स्त्रीपुरुषं कार्यमुमेशौ दिव्यरूपिणौ। अष्टवक्त्रं तु देवेशं जटाचन्द्रार्धभूषितम्।।
   द्विपाणिं द्विभुजां देवीं सुमध्यां सुपयोधराम्। वामपाणिं तु देवस्य देवस्कन्धे नियोजयेत्।।
   दक्षिणं तु करं शम्भोरुत्पलेन विभूषितम्। देव्यास्तु दक्षिणं पाणिं स्कन्धे देवस्य कल्पयेत्।।
2. रुपमण्डन, बलराम श्रीवास्तव (संपादक), वाराणसी, 1968, 4-27, 28, 2
   उमामहेश्वरं वक्ष्ये उमया सह शंकरः। मातुलिंगं त्रिशूलश्च धरते दक्षिणे करे।।
   आलिंगितो वामहस्ते नागेन्द्रो द्वितीये करे। हरस्कन्द उमाहस्ते दर्पणो द्वितीये करे।।
   अधस्तात् वृषभं कुर्यात् कुमारं च गणेश्वरम्। भृगिरिटिं तथा कुर्यान्निर्मासं नृत्यसंस्थितम्।।
3. अपराजितपृच्छा (भुवनदेव कृत), पोपटभाई अंबाशंकर मांकड (संपादक), गायकवाड़ ओरियण्टल, सीरीज, खण्ड 115, बड़ौदा, 1940, 213: 25-27
4. मत्स्य पुराण, आप्टे, एच.एस(संपादक), पूना, 1907, 260/11/20
5. देवतामूर्तिप्रकरण, उपेन्द्र मोहन सांख्यतीर्थ (संपादक), कलकत्ता, 1936, अध्याय 6, 32, 34
6. श्रीमद्भागवतपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, 6/17/4 - 5
   गिरिशं ददृशे गच्छन् परीतं सिद्धचारणैः।
   आलिंग यागींकृतां देवीं बाहुना मुनि संसदि।।
7. अंशुमद्भेदागम, शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ, वास्तु-शास्त्रम् प्रतिमालक्षणम् से उद्धृत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 149
   केवलं त्वेवमाख्यातं वामे गौरीसमायुतम्।
   तद्गौरीसहितं ख्यातं भिन्नपीठैकमेव वा।।
8. लिंग पुराण, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई 1981, 1. 92.7
9. वामन पुराण, पंचानन तर्करत्न(संपादक), बंगवासी प्रेस, कलकत्ता, 3.42.23.-25
10. शिव पुराण, हनुमान प्रसाद (संपादक), गीताप्रेस, गोरखपुर, 1978, खण्ड 5, अ. 21.9
11. Journal of the U.P. Historical Society, XXII, Page 128, Lucknow
    मथुरा संग्रहालय संख्या 11.2106, 34.2495
12. कालिदास कृत कुमारसम्भव, के.पी. परब(संपादक), निर्णयसागर प्रेस, शक संवत् 1915 , 8/8
    तस्याः स कठापिहितास्तनाग्रन्यधत्त मुक्ताफलाहार वल्लीम।
    या प्राप मेरुद्वितस्य मूध्नि स्थितस्य गागौध युगस्य लक्ष्मीम्।।
    घूर्णमाननयनं स्खलत्कथं स्वेदविन्दुमदकारण स्मितमं।
    आननेनतु तादीश्वर चक्षुशा चिरमुखमुखपपौ।